सुख की खोज

(आचार्या निर्मला बहन, फरीदाबाद)

सत्य का तो पता नहीं सिर्फ अनुमान के आधार पर ही कहा जा सकता है कि जब से सृष्टि की रचना हुई है, शायद तभी से इंसान 'सुख की खोज' में भटक रहा है। शायद इसी सुख के लिए आदम ने देवदूत के मना करने पर भी वर्जित फल खाया और दुखी हुआ। तब से लेकर आज तक इतिहास में, धर्म–ग्रन्थों में, शास्त्र और पुराणों में, सभी धर्मों की यही कहानी है कि कोई भी पूर्ण सुखी नहीं हुआ। अर्थात् कोई भी ऐसा उदाहरण मौजूद नहीं है जिसे पूर्णरूप से सुखी कहा जा सकता हो चाहे वह पीर–पैगम्बर हो, या अवतार हो या स्वयं प्रभु ही क्यों न हों; जो भी इस संसार में आया पूर्ण सुखी नहीं बन पाया। इसीलिए हमारे ऋषि–मुनि, संन्त–महात्मा यही कह गये कि यह संसार दुखालय है, दुखों की खान है। नानकदेव जी भी यही कह गये 'नानक दुखिया सब संसार वही सुखी जो नाम अधार' और कबीर साहब भी यही कह गये 'तन धर सुखिया कोई न देखा, जो देखा सो दुखिया हो।' अन्त में कहते हैं 'संत सुखी जिन मन जीती हो।'

अब प्रश्न पैदा होता है कि क्या यह संसार वास्तव में धोखा है, मृग–तष्णा है, यहां 'सुख' नाम की कोई वस्तु ही नहीं है। यदि यह सत्य है तो इस संसार को बनाने वाला निर्दयी, कठोर और जालिम हुआ माना जाएगा। लेकिन संसार के सभी धर्मावलम्बी इस संसार के बनाने वाले को दयालु और कृपानिधान कहते हैं। फिर गलती कहां हो रही है। कहते हैं कि गणित के प्रश्न हल करते समय यदि शुरू में ही 'हासिल' (carry) करते हुये गलती हो जाए तो पूरा फारमूला और प्रक्रिया ठीक होने पर भी उत्तर गलत ही आता है। शायद हमारी 'सुख की खोज' में भी यही गलती हो रही है। इसका स्पष्टीकरण उचित स्थान पर आगे दिया जाएगा।

इस संसार की रचना करने वाली शक्ति कोई मामूली शक्ति नहीं है। इस संसार को किसी फैक्टरी में नहीं बनाया गया है। यदि

आधुनिक वैज्ञानिकों एवं दार्शनिकों की 'बिग बैंग थ्योरी' को भी थोड़ी देर के लिए सत्य मान लें तो फिर प्रश्न पैदा होता है कि जो 'बिग बैंग' था जिसके विस्फोट होने से यह संसार पैदा हुआ माना जाता है तो वह 'बिग बैंग' कहां से आया था? उसे किसने बनाया था? अतः यह मानना ही पड़ेगा कि यह सब उस अदृश्य अनन्त सत्ता की संकल्प शक्ति से ही पैदा हुआ था। अब यह विचारणीय विषय है कि जब उस महान शक्ति ने इतनी कुशलता से इस सृष्टि का निर्माण किया कि कोई भी दो पत्तियां एक जैसी नहीं बनाई, सब कुछ योजनाबद्ध तरीके से हुआ तब उसने इस संसार को दुखालय क्यों बनाया?

हमारे उपनिषद् कहते हैं, 'ऊँ पूर्णं इदः पूर्णं इदम् पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावश्यिते।' अर्थात् इस सृष्टि को बनाने वाला पूर्ण है और यह सृष्टि भी पूर्ण है। इस सृष्टि के बनाने के बाद भी वह पूर्ण ही है, उसमें कोई कमी नहीं आई। तो फिर उस दयालु शक्ति ने इस संसार में दुख ही दुख क्यों भर दिये? इसका एक समाधान तो यह हो सकता है कि उस महान शक्ति ने जिसका कोई नाम नहीं है और सभी नाम उसके हैं, चाहे उसे किसी भी नाम से पुकारो, कोई फर्क नहीं पड़ता, इस संसार को अति सुंदर, सब सुख सुविधाओं से सम्पन्न बनाया ताकि इसमें हजरते इंसान को जब उतारा जाए तब उसको कोई कष्ट न हो, वह अकेलापन महसूस न करे, वह 'बोर' न हो जाय। अब जब वह सृष्टि का सिरमौर, अशरफुल मख़लूकात, इस धरती पर उतारा गया तो उसका प्रयोजन भी बहुत ही उत्तम था। वह प्रयोजन यह था कि जीव मालिक से दूर रहकर विरह का अनुभव करें (अधिक समय तक जब कोई किसी के पास रहता है तो उनके संबंधों में कोई नवीनता नहीं रहती, ज्यों ही वह दूर जाता है तो उसकी याद सताती है और फिर प्रेम गाढ़ा होता है) और मालिक से अधिक– से–अधिक प्यार करके जल्दी से जल्दी उसके पास वापस लौट जाए।

क्रमशः